Impact Factor - IIFS-2.875   ISRA JIF-1.312

E-ISSN 2582-5

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journa

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journ
January - March 2021   Vol.02 ISSUE IV

Editor - Dr. Girish S. Koli, AMRJ, Yawal
Visit To - www.aimrj.com

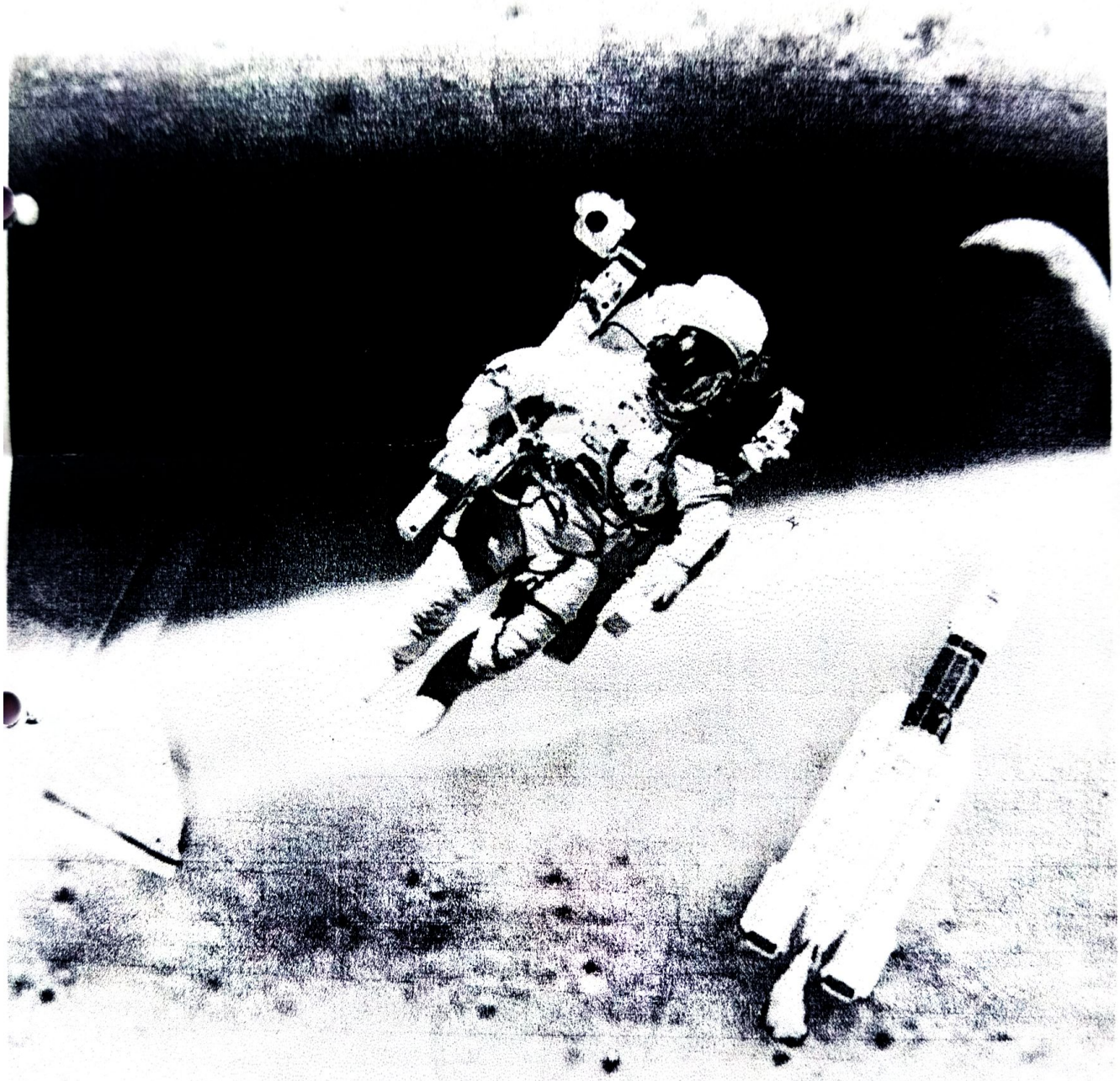

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

JANUARY –MARCH 2021

VOL.02. ISSUE IV

International Impact Factor Services IIFS *2.875*

International Society for Research Activity (ISRA)

Journal-Impact-Factor (JIF) *ISRA JIF- 1.312*

Chief & Executive Editor

Dr. Girish Shalik Koli (AMRJ)

Dongar Kathora, Tal. Yawal,

Dist. Jalgaon [M. S.] India. Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612 Email: aimrj18@gmail.com

Website: www.aimrj.com

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony, Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal

Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Mob. 09421682612

©Copyright 2021 *AMRJ*. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
30	उर्दू का महान कवि : डॉ. इकबाल	डॉ. शेख आफाक अंजुम	131-134
31	हिंदी दलित साहित्य में मूल्य संघर्ष	प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे	135-139
32	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समीक्षा	मीता विरमानी रीमा लांबा	140-145
33	'गाँव का मन' निबंध संग्रह में लोकजीवन और ग्राम्य प्रकृति चित्रण	डॉ. प्रमोद मनोहर चौधरी	146-149
34	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति के अंतरंग	डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी	150-153
35	उत्तरशती यात्रा साहित्य में सौंदर्यात्मकता	डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार	154-157
36	"पीटरपौलएक्का के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समस्यायों का समाजशास्त्रीय अध्ययन"	प्रा.एकनाथ गणपती जाधव	158-160
37	फाँस उपन्यास के संघर्षशील किसान स्त्री पात्र	प्राजकता पवार यादव	161-164
38	ग्रामीण एवं शहरी हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों का विज्ञान विषय में उच्च मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. संगीता सराफ मोनिका चौबे	165-168
39	भारतीय वाङ्मय में नाट्यशास्त्र का महत्व एवं वैशिष्ट्य	डॉ. अंशुमान वल्लभ मिश्र	169-171
40	महानगरीय सभ्यता के बीच टूटते जीवन मूल्यों का चित्रण - 'नरक मसीहा'	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	172-175
41	भ्रष्ट्राचार का जीवन्त दस्तावेज- उत्कोच	डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	176-180
42	विधवा उपन्यास की त्रासदी : तापसी	डॉ. कामिनी तिवारी	181-184
43	"विजन" उपन्यास में स्त्री संवेदना	डॉ. वसंत माळी	185-187
44	नारी विमर्श का एक नया अध्याय: शकुंतिका	डॉ.गिरीष एस. कोळी	188-191
45	बिन्दु उपेक्षित स्त्री के जीवन की व्यथा	डॉ. कामिनि तिवारी	192-195
46	अक्षयवट नाटक में चाणक्य चित्रण	डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	196-198
47	समकालीन हिंदी आदिवासी उपन्यासों की भाषा शैली ('जंगल के आसपास' और 'पिंजरे में पन्ना' के संदर्भ में)	डॉ. रमेश एस. जगताप प्रा. संतोष भिका तमखाने	199-203
48	अनामिका की कविताओं में सामाजिक बोध	डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण	204-207
49	गुप्तोत्तर कालीन भूमि पद्धति (मध्यप्रदेश के 7 वीं सदी से 13 वीं सदी तक के विशेष संदर्भ में)	डॉ. (श्रीमति) पप्पी चैहान	208-212
50	हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान	डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय	213-216

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति के अंतरंग

डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
सहयोगी प्राध्यापिका एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
लक्ष्मी शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी, ता. अलिबाग, जि. रायगड
Email- sngitachitrakoti@gmail.com

मैत्रेयी पुष्पा स्वातंत्र्योत्तर युग की एक सशक्त साहित्यकार है। जिन्होंने अपने युग की ग्रामीण परिवेश को समग्र रूप से दृष्टिपात किया है। शायद इसीलिए उन्हें 'शुध्द गाव की कथा लेखिका' भी कहा गया। शहरी चकाचौंध की ओर तो सभी आकर्षित हो जाते है परंतु मैत्रेयी पुष्पा ने केवल एक उपन्यास 'विजन' शहरी वातावरण पर लिखा।उनका झुकाव गावों की ओर अधिक है क्योंकि बीस साल तक वह गाव में रहीं। जो संस्कार बचपन में होते है वहीं अंततक रहते है। बाहर से मनुष्य कितना ही मुखौटा धारण करे लेकिन अंदर से वह वहीं रहता है जैसे उसपर संस्कार हुए है। उसी प्रकार मैत्रेयी पुष्पा पर बीस साल तक गाव के ही संस्कार हुए अत: उनका मन गाँव से जूड गया। इसलिए उनके साहित्य में गांव बहुत है। मैत्रेयी ने गांवो की जो छवि उभारी है वह सीधी सरल, यथार्थ तो है ही लेकिन गांव के कटुसत्य को भी उजागर करती है। मैत्रयी पुष्पा के साहित्य से यदि प्रेमचंद के साहित्य की तुलना की जाए तो उनमें साम्य प्रतीत होता है। प्रेमचंद के साहित्य से हम घर बैठे पुरे उत्तरप्रदेश से परिचित हो जाते है उसी प्रकार मैत्रेयी पुष्पा साहित्य से हम बुंदेलखंड वविंध्याचल से परिचित हो जाते है। फर्क केवल इतना है की प्रेमचंद का साहित्य स्वतंत्रता के पूर्व का है और मैत्रेयी का स्वतंत्रता के बाद का।

भारत देहातों का देश है। भारत की संस्कृति का सच्चा रूप हमेग्रामीण जीवन में ही प्राप्त होता है। ग्रामीण कलाएँ, पर्व त्योहार, संस्कार, रूढियों प्रथाएँ, रीति रिवाज, खेलकूद आदि के योग से संस्कृति बनती है ये संस्कृति आज भी गांव में ही सुरक्षित है। ग्राम जीवन के संदर्भ में सत्यदेव त्रिपाठी कहते है- "भारतीय संस्कृति के अक्षय भण्डार ग्राम ही हैं। ग्रामीण के संस्कारों में आज भी संस्कृति के मूल रूप देखे जा सकते है अगर ग्राम संस्कृति को भारतीय संस्कृति कहा जाये तो बेजा न होगा।"...1

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में सामाजिक जनजीवन के तीज-त्योहार, रीति-रिवाज, जन्म, शादी -व्याह, मृत्यू आदि के संबंधी विविध लोक संस्कार दिखाई देते है।जो निम्न नुसार है --

लोकसंस्कार :- सामूहिक जीवन पध्दति गांव की और भारतीय संस्कृति की खास विशेषत: है। जन्म, व्याह, और मृत्यू गांव के सामुहिक मामले होते है। गाँव के लोग ब्याह कारज को लेकर बहुत उत्साहित होते है। 'कस्तुरी कुण्डल बसे इस औपन्यासिक आत्मकथा में मुहूर्त देखना, कन्या कर्णछेदन, विवाह के विविध रस्मे, व्दाराचार, पाणीग्रहण, बन्दनवार बाँधना, खांड कटोरा इत्यादि लोकसंस्कारों का सजीव चित्रण हुआ है। गाँव वालों की धारणा है की किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले मुहूर्त निकलवाना आवश्यक होता है। बिना मुहूर्त देखे कोई भी कार्य संपन्न नहीं होता। मैत्रेयी के विवाह के समय मुहूर्त देखने की रीति का पालन किया जाता है। विवाह के पूर्व 'कन्या कर्ण छेदन' की रस्म होती है उसके लिए भी मुहूर्त देखा जाता है। मुहरत के समय औरते कटोरे भर अनाज लेकर आती है। मंडप के चौक पर अनाज अर्पण करती है। मातृकुल के दीपक मामा थाली में रोली, चावल, अक्षत और कर्ण छेदन के लिए सोने की बालिया लाता है क्योंकि कर्ण पुराने चीज से नहीं छेदे जाते।

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

पंडितजी मंत्र पढ़कर कन्या के कानों के लवों पर दूब हल्दी देकर कर्ण छेदन करते है। उसके बाद वधू के लिए बनाए गए अन्य अलंकार पहनाए जाते है। इस प्रकार मैत्रयी पुष्पा ने चित्रात्मक शैली मै इन संस्कारों को अभिव्यक्त किया है।'बेतवा बहती रहीं' उपन्यास में उर्वशी का कन्यादान, विदा, देहरी पूजन, देवता पूजन जैसे विवाह की रस्मों को रेखांकित किया है। धर्म शास्त्र में कन्यादान को श्रेष्ठ दान कहा गया है। कन्या का पिता धार्मिक एवं पवित्र भाव से अपनी कन्या का दान वर को करता है। कन्यादान करते समय कन्या का पिता वर से कहता है - "अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक नामवाली आभूषणों से युक्त इस कन्या का तुम स्वीकार करो।" ... 2 लेखिका कन्यादान के रस्म की और सकारात्म नजर से देखती है इसलिए वह कहती है – " शायद इसीलिए रस्म बनाई गई होगी कि जो कन्यादान करे वहीं जन्मभर बुलाए चलाए।" ... 3 मैत्रेयी जी कन्यादान, विदा आदि प्रसंगों के चित्रण से पाठकों को अत्यंत भावुक बनती है। 'चाक' उपन्यास में 'चरूए चढ़ाना' एक रस्म का वर्णन किया गया है। यह बालक के जन्म के दो दिन के बाद का उत्सव होता है। मटके में पानी भरकर चूल्हे पर रखा जाता है। यह पानी माँ के पीने के लिए होता है। उसे ही 'चरुए का पानी' कहते है। गाँव की औरते कटोरी में अनाज भरकर लाती है। आँगन तक माँ चलकर आती है। वहाँ औरते गीत गाती है। औरतों को इस प्रसंग पर खाना भी खिलाया जाता है फिर यह उत्सव सम्पन्न होता है। 'झुला नट' में 'देवर की गोद-बिठाई' की रस्म का वर्णन मिलता है। गोद-बिठाई का मतलब है भाभी से बच्चे जैसा रिश्ता जोड़ना। अर्थात भाभी को माँ माना जाता है। इसमें बालकिशन को भाभी के गोद में बिठाया जाता है। सर पर फटा सूप मारा जाता है। औरते इस समय गीत गाती है। भाभी अपने देवर कुछ नेग देती है। 'अल्मा कबूतरी' में दाह-संस्कार का चित्रण मिलता है। इन लोकसंस्कारो को चित्रित कर मैत्रेयी ने भारतीय संस्कृति को जींवत किया है।

त्योहार उत्सव :- देहातों में त्योहार- उत्सव, मेलों की सांस्कृतिक प्रथा है।ये इनके सामुहिक उत्सव - त्योहार होते है। गांव के लोग हर्ष-उल्लास में सभी त्योहार मनाते है। 'अगनपाखी' उपन्यास में **'मामुलिया'** का विस्तार से वर्णन मिलता है। मामुलिया कुंआरी लडकियों व्दारा खेला जाता है । **'रक्कस बाँधना'** धरती माँ के प्रति प्रेम आदरगौरव व्यक्त करनेवाली बुंदेलखंड की परंपरा है जिसका उल्लेख अगनपाखी' में मिलता है 'चाक' उपन्यास में सारंग और गांव की औरते करवा चौथ का व्रत रखती है। तथा पितृ अमावस्या के दिन तालाब पर जाकर अपने पूर्वजों के नाम पर पिंडदान, करके श्राध्द भी करने की विधि भी चाक उपन्यास में चित्रित की है। इसी उपन्यास में **'चट्टा चौथ'** त्योहार का वर्णन किया है इसमें माँ अपने बच्चों के लिए व्रत रखती है।इस व्रत में बच्चों की पूजा होती है। उनके लिए दुवा की जाती है। माँ दिनभर व्रत रखती है और रात को तारे देखकर व्रत खोला जाता है। **(होली) 'फाग'** मैत्रेयी पुष्पा का लोकप्रिय त्योहार रहा है। फाग अर्थात होली का त्योहार। इदन्नमम्', 'चाक', 'झुला नट', और 'अल्मा कबूतरी' जैसे उपन्यासो में मैत्रेयी ने फाग का चित्रण किया है। फाग के सुंदर गीत भी इनके उपन्यासों में प्राप्त होते है। 'चाक' उपन्यास का उदाहरण दृष्टव्य है-

"समय की लाज गहो गोरी समहे की.....
नाक नथुनियां भी पै हाति नाय
तो क्या रे पहरि खेलू होरी
समहे की लाज गहो गोरी समहे की......
अब के तो गोरी तुम यों ही हंस खेलो,

E- ISSN 2582-5
Akshara Multidisciplinary Research Journa
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

तो फिर के गढ़ाय दे दो जोड़ी
समहे की लाज गहो गोरी समहे की....."....4

उनके 'इदन्नमम'उपन्यास में **'कार्तिक नहान'**का वर्णन किया गया है जो पूर्णिमा से शुरू होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता है। इसके अलावा करवा चौथ, सुआटा, संक्रांति, रककस बांधना आदि रस्मों का उल्लेख मिलता है। अगनपाखी उपन्यास में **रककस बांधना** परंपरा का उल्लेख मिलता है अपनी धरती माँ के प्रति प्रेम, आदर,सन्मान, गौरव व्यक्त करनेवाली यह बुंदेलखंड की परंपरा है इसमें माँ बचपन में ही बच्चों को गाँव की खेतों की सीमा दिखाकर कहती है – " यह धरती तेरी है इसको कोई नुकसान न पहुंचाए। यह गाँव तुम्हारा है। इसके सीमा की तुम रक्षा करोगे।".... 5 यह कहकर बुन्देली माँ अपने बेटे के कमर पर 'रक्कस का धागा' बांधती है। धागे के जरिए लकड़ी की नन्ही तलवार लटकाती है। फिर पपरिया और गुलगुला की पूजा कर बेटे को जंग के लिए ललकारती है बुन्देली माँ की तरह हर माँ अपने बच्चे को यह संस्कार दे तो देश की ओर वैमनस्य के भाव से देखने की कोई हिम्मत नहीं करेगा। हर बच्चे के मन में देशभक्ति का भाव निर्माण होगा।

लोक गीत:- जन्म से मृत्यू तक षोडश संस्कार, ऋतुओं के गीत गाकर ग्रामीण जनता अपना मनोरंजन करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने अनेक सुंदर लोकगीतों से अपने साहित्य को सजाया है, फागे चैता, सावनगीत, ढोला, तुकबन्ही, फसलगीत, आल्हाखंड, बालगीत और भजन भी मैत्रेयीपुष्पा के उपन्यासों में प्राप्त होते है। 'चाक' उपन्यास में **फसल गीत** का वर्णन किया है 'फसल' के गीत के लिए दो दल बनाए गए है और दोनो दल कतार में खडे है। पहला दल (गुलकंदी) गीत गाती है -

"मैं तो रारौ, मैं तो रारौ, बुवाऊँगी ऐसे-ऐसे / मोय दाऊ की सों ऐसें। " दूसरा दल (कुंती) इसके बाद कुंती घूँघट डालकर बहू बन जाती है। और अभिनय करती हुई गुलकंदी के पाले में आ जाती है। -

"मैं तो झिनमा, मैं तो झिनमा बुवाऊँगी ऐसे-ऐसे मोय दाऊ की सों ऐसें।" / हरिप्यारी ढोलक बांधे खड़ी है। लोंगसिरी बीवी आगे बढ़कर गीत गाती है-- "मैं तो निबुआ, मैं तो निबुआ तुडाऊँगी ऐसे ऐसे मोय दाऊ की सोंऐसें।" ... 6

बालगीत:-बालगीत बच्चों के साथ जुडने का सशक्त माध्यम होता है। साथ ही बच्चों को सिखाने का महौल बनाने भी बालगित सहायक होते है।इदन्नमम्' उपन्यास में बालगीतों का आनंद भी पाठकों कोमिलता है.....

"आलू भटा की तिरकाई, नाचे मुन्ना की मताई।"
"एक फूल की चार कली रानी डोले गली गली।"...7

लोककथा :-लोक कथा का कोई कर्ता नहीं होता। मौखिक परंपरा से चलनेवाली निवेदन प्रधान गद्य कहानी अर्थात लोककथा है। लोक कथा भ्रमणशील होती है इसलिए स्थल, काल के अनुसार उसमें परिवर्तन हो सकता है। मैत्रेयी ने अपने साहित्य में अनेक लोककथाओं का सहारा लिया है। दंतकथा, पुराणकथा, परीकथा, नवलकथा, हास्यकथा, वीरकथा नितिकथाओं के माध्यम से समाज में प्रचलित श्रध्दा, परंपरा, विश्वास अभिव्यक्त हुई है। 'चाक' उपन्यास में 'मोतिन की कथा''करवा चौथकी कहानी' अल्मा कबुतरी' में 'डेसू की कथा' 'कबुतरा जाति की इतिहास कथा''अगनपाखी' उपन्यास में 'देवी कुमुद की कहानी', 'गौरी ताल की कथा' इत्यादी कथाओं की आकर्षक प्रस्तुति की है। जहाँ-जहाँ उन्होंने लोककथाओं का सहारा लिया है वहाँ उपन्यास के लिए वह

©Copyright 2021, AMRJ All Rights Reserved

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

आवश्यक भी था। उन्होंने उपन्यास के प्रसंग और लोककथा का संदर्भ लेकर दोनों में सटीक मेल बिठाया है।

लोकगाथा :- लोकगीत की तरह 'लोकगाथा' भी एक प्रकार का गीतप्रकार है। लोकगीत आकार में छोटा होता है परंतु लोकगाथा का विस्तार सैकडों पृष्ठों में होता है। विषय की दृष्टि से भी दोनों में भिन्नता दिखाई देती है। लोकगाथाओं में प्रेम का गहरा भाव तो रहता है परंतु यह प्रेम संघर्षों का सामना करता हुआ सफलता पाता है। इन गाथाओं में वीरता, रहस्य, साहस व रोमांच पाया जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'अगनपाखी' उपन्यास में 'राजा अमन' की कथा बताई है। 'चाक' उपन्यास में स्त्री की अंतहीन व्यथा की साक्षी चंदना की कथा बताई है। राजा पिरथम व राणी मंझा की कथा इसी उपन्यास में चित्रित की है क्योंकि मंझा को जिस तरह संतान दुख था उसी प्रकार सारंग को भी था। अंत में मंझारानी जिस तरह साहस का परिचय देती है उससे सारंग प्रेरणा लेती है और दृढ निश्चय करती है कि मंझारानी की तरह मैं हिम्मत से काम लूँगी। रोऊँगी नहीं, हौसला रखूंगी।

मानव समाज में संस्कृति का अपना महत्व है। संस्कृति जतन करनी पड़ती है। मैत्रेयी पुष्पा ने भारतीय संस्कृति, परम्पराओ कासंरक्षण व संवर्धन अपने उपन्यासों मे किया है। वह लोकसाहित्य की प्रेमिका है। २० साल तक गाँवो में रहकर उन्होंने समाज से निकटतम संबंध स्थापित किया। अतः स्थानीय विश्वासों, प्रथाओं तथा परंपराओं का अध्ययन कर सफल चित्रण वह कर सकी है। बिखरी हुई सामग्री को भी उन्होने एकत्र किया है। उस दृष्टि से कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा ने ग्राम जीवन के विविध आयामों का बारीकी से अंकन किया है।

संदर्भ : -

1. श्यामचरण दुबे (2000), भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 5
2. मैत्रयी पुष्पा (1994),बेतवा बहती रही,किताबघर नयी दिल्ली, पृ.46
3. मैत्रयी पुष्पा(1994), बेतवा बहती रही, किताबघर नयी दिल्ली, पृ. 42
4. मैत्रयी पुष्पा (1999),चाक, राजकमल प्रकाशन, पृ. 360-359
5. मैत्रयी पुष्पा(2001),, अगनपाखी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 13
6. मैत्रयी पुष्पा (1999), चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 207
7. मैत्रयी पुष्पा (2000), इदन्नमम, किताबघर नई दिल्ली , पृ. 15

□ □ □

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved